शोध मंथन Vol. XV No.IV Oct.- Dec. 2024 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

सतत विकास और शातिपूर्ण जीवनः एक एतिहासिक परिप्रेक्ष्य

प्राप्तिः 26.10.2024
स्वीकृतः 10.12.2024

83

सुबोध कुमार शर्मा
असिसटेंट प्रोफेसर (इतिहास)
राजकीय महाविद्यालय बनेड़ा (शाहपुरा)
ईमेलः subodhmphil@gmail.com

सारांश

यह शोधपत्र सतत विकास और शांतिपूर्ण जीवन के आपसी संबंधों का ऐतिहासिक दृष्टिकोण से विश्लेषण करता है। सतत विकास का विचार न केवल पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने का आहवान करता है,बल्कि यह सामाजिक और आर्थिक न्याय की स्थापना में भी सहायक है। इतिहास में विभिन्न सभ्यताओं और संस्कृतियों ने संसाधनों के संतुलित उपयोग और सामुदायिक सहयोग के माध्यम से शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। इस शोधपत्र में इन ऐतिहासिक प्रयासों की समीक्षा की गई है और यह दिखाया गया है कि कैसे सतत विकास के सिद्धांत समय–समय पर समाजों में बदलाव और शांति स्थापित करने का माध्यम बने। साथ ही, यह अध्ययन वर्तमान समय की चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए इस बात पर जोर देता है कि सतत विकास का पालन न केवल भविष्य की पीढ़ियों के लिए आवश्यक है, बल्कि यह विश्व्यापी शांति और स्थिरता के लिए भी अनिवार्य है।

मुख्य बिन्दू

सतत विकास, शांतिपूर्ण, जीवन, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, पर्यावरणीय संतुलन, सामाजिक न्याय, आर्थिक स्थिरता, सामुदायिक सहयोग, संसाधन प्रबंधन, वैश्विक शांति।

सतत विकास केवल आर्थिक विकास को ही नहीं बढ़ावा देता, बल्कि यह अपने लाभों को समान रूप से वितरीत करता है और पारिस्थितिकी तंत्र को नष्ट करने के बजाय पुनर्जीवित करता है। यह विकास सभी व्यक्तियों को जीवन में अपनी पसंद का निर्णय लेने के लिए समान अवसर प्रदान करता है। तेजी से बदलती दुनिया में, सतत विकास एक प्रमुख तत्व बन गया है, क्योंकि यह सीमित संसाधनों वाले ग्रह पर मानव जीवन के कल्याण के लिए तर्क करता है ताकि हर कोई प्राकृतिक संसाधनों और पर्यावरण का उपयोग कर सके और उन्हें भविष्य की पीढ़ियों के लिए संरक्षित रखा जा सके। सामाजिक वैज्ञानिक मानते हैं कि प्राकृतिक संसाधन सीमित हैं, और 'तेजी से विकसित हो रही अर्थव्यवस्थाएँ' इन संसाधनों को खतरे में डाल रही हैं।

व्यक्ति की इच्छाएँ असीमित होती हैं,और हर कोई समृद्धि आनंद, स्वस्थ कौशल, ज्ञान की ध ारा, स्वस्थ पर्यावरण और शांति चाहता है, जो केवल सतत विकास से संभव है। किसी भी बौद्धिक

पद्धति से यह स्पष्ट होता है कि सतत विकास न केवल वर्तमान बल्कि भविष्य की चुनौतियों को समाधान भी प्रदान करता है। परिवर्तन या विकास इस ब्रह्मांड की आवश्यक प्रक्रिया है। इतिहास हमें बताता है कि वर्षों के दौरान कई परिवर्तन हुए हैं। प्रारंभिक मानव प्राकृतिक घटनाओं को अज्ञानता से देखता था। प्राचीन काल में इसे आश्चर्य के रूप में देखा गया। मध्यकाल के लोग धामक विश्वास के माध्यम से इसे समझने लगे, और आधुनिक युग में लोग इस तक के माध्यम से देखते हैं।

हालाँकि, आधुनिक समय में यह तर्क आर्थिक विकास की आवश्यकता पर केंद्रित हो गया है। यही वह स्थान है जहाँ सतत विकास की अवधारणा मानव जीवन के कल्याण और बेहतरी के लिए समाधान प्रदान करती है। कई देशों का सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP)उच्च है, लेकिन जीवन स्तर कम है क्योंकि उनकी प्राथमिकता अधिकतम लाभ है। संयुक्त राष्ट्र सभी देशों को जमीनी स्तर पर विकास करने के लिए प्रोत्साहित करता है ताकि जनमानस का जीवन स्तर और सामान्य जीवन शैली बेहतर हो सके। जैसा कि यह कहा गया है, ''शांति के बिना विकास असंभव है, और विकास के बिना शांति संकटग्रस्त होती है।''

आज का समाज पारिस्थितिक असंतुलन, नशे की लत, सामाजिक समस्याओं और जलवायु परिवर्तन जैसी चुनौतियों का सामना कर रहा है। प्राकृतिक संसाधनों का अति–शोषण और जनसंख्या विस्फोट इस स्थिति को और भी बदतर बना रहे हैं। प्रकृति और पर्यावरण विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं और जलवायु संकटों के माध्यम से मानव शोषण के खिलाफ अपना गुस्सा प्रकट कर रहे हैं। इस संक्रमणकालीन स्थिति में सतत विकास की एक उपयुक्त और स्वीकार्य प्रणाली की आवश्यकता अत्यधिक प्रासंगिक है।

महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानंद, विनोबा भावे और शूमाकर जैसे विचारकों ने सतत विकास के विचार का समर्थन किया। गांधीजी के अनुसार, ''पृथ्वी हर व्यक्ति की आवश्यकता को पूरा करने के लिए पर्याप्त है, लेकिन हर व्यक्ति के लालच को पूरा करने के लिए नहीं।'' उन्होंने हमेशा अहिंसा और प्रकृति के साथ मानव के सामंजस्यपूर्ण संबंध की बात की। गांधीवादी आर्थिक प्रणाली का आधार मानव की नैतिकता, आत्मनिर्भरता और समग्र विकास के उद्देश्य से जुड़ा है।

वर्तमान समस्याओं को केवल विज्ञान, प्रौद्योगिकी, नवचार और औद्योगिक निवेश में वृद्धि करके हल नहीं किया जा सकता, क्योंकि उन्हें वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण से देखा जाना चाहिए, न कि केवल विषयगत लाभ के संदर्भ में। कभी–कभी मनमाने 'आदेश' आत्म–शासन और आत्म–नियंत्रण प्रणालियों के लिए अनुपयुक्त हो सकते हैं। विश्व दृष्टिकोण और सामाजिक व्यवहार का संतुलन किसी भी समस्या से निपटने के लिए आवश्यक है। यह प्रणाली मानव विकास में सहायक होती है और पारिस्थितिकी और अन्य संसाधनों के साथ स्थिर संबंध बनाती है, जिससे समाज की आवश्यकताएँ पूरी हो सकती हैं।

सामाजिक जरूरत, जो आत्म–नियंत्रण वाले व्यवहार से संतुष्ट होता है, समाज का समग्र मागा का पूरा कर सकती हैं। हालाँकि, आधुनिक विकसित समाज में ऐसा व्यवहार स्थायी नहीं रह पाता। सतत विकास के विचार को कई विचारकों ने समर्थन दिया है, जिनमें गांधी, विवेकानंद, विनोबा भावे और शूमाकर प्रमुख हैं। गांधीजी के अनुसार, ''पृथ्वी हर व्यक्ति की आवश्यकता को पूरा करने के लिए पर्याप्त है, लेकिन हर व्यक्ति के लालच को पूरा करने के लिए नहीं।'' उन्होंने हमेशा अहिंसा

और प्रकृति के साथ मानव के सामंजस्यपूर्ण संबंधों पर जोर दिया। गांधीवादी आर्थिक प्रणाली नैतिकता, आत्मनिर्भरता और समग्र विकास के उद्देश्य पर आधारित है।

आधुनिक प्रौद्योगिकी ने, जो आज विकसित हुई है, पारिस्थितिक संतुलन, मानव स्वास्थ्य और मानवता के लिए हानिकारक साबित हुई है। शूमाकर ने कहा, ''हमें छोटे पैमाने पर, प्रबंधनीय इकाइयों में ध्यान केंद्रित करना चाहिए। 'छोटा सुदंर है' और इसके लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी के एक गहन पुनः अभिविन्यास की आवश्यकता होगी।'' उन्होंने एक नए प्रकार के विकास की मांग की, जो जैविक, सौम्य, अहिंसक, सुंदर और सुरुचिपूर्ण हो।

आधुनिक देशों में, स्वास्थ्य, सुदंरता और स्थायित्व जैसी अनमोल विशेषताओं की अनदेखी की गई है। विकासशील देश जो उन्नत और परिष्कृत सामग्रियों की मांग करते हैं, वे अपने स्थानीय श्रम और संसाधनों का उपयोग करने में असमर्थ हैं और यूरोप और अमेरिका से आयातित कौशल और तकनीक पर निर्भर हो जाते हैं। शूमाकर ने कहा कि गरीब देश अपने आप को अंतरराष्ट्रीय पर्यटक तकनीक के सामने बेच देते हैं।

विकास को समाप्त नहीं किया जा सकता और न ही किया जाना चाहिए। जब तक पृथ्वी हमें रोजी–रोटी प्रदान करती है, विकास और समृद्धि चलती रहेगी। लेकिन यह आवश्यक है कि विकास सभी के लिए समान हो और किसी भी प्रकार के भेदभाव के बिना हो। सतत विकास, जो शुद्ध अहिंसक आधार पर आधारित है, समाज के निचले वर्गों को भी समृद्ध कर सकता है। भारी उद्योग देश की जीएनपी (सकल राष्ट्रीय उत्पाद) वृद्धि के लिए आवश्यक हैं, लेकिन हम लघु उद्योगों की उपेक्षा नहीं कर सकते, जहाँ कारीगर अपनी विरासत से प्राप्त कौशल के माध्यम से छोटे लेकिन सुंदर उत्पाद बनाते हैं।

इस प्रकार, सतत विकास का लक्ष्य न केवल भौतिक समृद्धि है, बल्कि ऐसा संतुलन बनाना भी है, जहाँ सभी स्तरों के लोग समृद्ध और संतुष्ट हो सकें।

1.1 सतत विकास और उसकी विशेषताएँ

सतत विकास कुछ प्रमुख विशेषताओं के साथ जुड़ा हुआ है, जिसमें उत्पाद का स्वरूप, मशीनरी का संसाधन उपयोग, कुशल और अकुशल श्रम, छोटे पैमाने पर उत्पादन, और इसमें शामिल पूरक उत्पाद और सेवाएँ शामिल है। हाल ही में, हावड पक न तक दिया है कि देश रोजगार, उत्पादन और बचत के संदर्भ में नीतियों का अपनाकर पर्याप्त लाभ प्राप्त कर सकते हैं, जो सबसे उपयुक्त तकनीकों को अपनाने की ओर ले जाती हैं।

छोटे पैमाने के उद्योगों में श्रम–प्रधान तकनीकें ही आर्थिक रूप से व्यावहारिक होती हैं, जहाँ श्रम के स्तर में वृद्धि संभव है और यह समानता की दिशा में अग्रसर करता है। कृषि विकास, जिसमें सिंचाई में वृद्धि, फसल चक्र का विविधीकरण, कृषि अनुसंधान का परिचय, और उन्नत खेती तकनीकों को उपयोग शामिल है, कभी–कभी गरीबी को कम करने के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत हो सकते हैं।

भौतिकवादी सुविधाओं और विश्वास के हिमालयीय शिखरों से, हम सर्वांगीण पर्यावरण प्रदूषण, पारिस्थितिक विनाश, ओजोन क्षरण, ग्रीन हाउस प्रभाव जैसी समस्याओं के अंतहीन गहराई

में गिरे जा रहे हैं, जो सभी जीवित प्राणियों के जीवन में झटके उत्पन्न कर रहे हैं। विज्ञान, प्रौद्योगिकी, औद्योगिकी उत्पाद, उपभोक्ता वस्तुओं की असाधारण व्यवस्था, और तकनीकी उपकरणों के प्रति हमारी प्रवृत्ति ने हमें बेरोजगारी, बेघरपन, अज्ञानता, बीमारी, अपराध और अन्य कुप्रथाओं की ओर धकेला है। ये समस्याएँ, जो विशाल और विशेषज्ञतापूर्ण विकसित संस्थानों के कारण उत्पन्न हुई हैं, अब हमेशा के लिए समाप्त होनी चाहिए।

भौतिक, तकनीकी और संस्थागत विकास का लाभ एक ऐसा साधन बनना चाहिए, जो समग्र रूप से मानव कल्याण को अधिकतम रूप से बढ़ावा दे। आर्थिक प्रगति को पारिस्थितिकी से प्रतिस्थापित करना चाहिए। यह अवधारणा सभी की आकांक्षाओं को पूरा करने में सक्षम होनी चाहिए। शैक्षिक प्रणाली को भी पुर्नगठित किया जाना चाहिए और यह वैश्विक दृष्टिकोण को अपनाने की सामान्य प्रवृत्ति को सुनिश्चित करने की आवश्यकता होगी, जो काफी हद तक अधिक विकेन्द्रीकृत बन जाए।

1.2 सतत विकास की दिशा में समग्र दृष्टिकोण

हमारे योजना का मुख्य उद्देश्य उपयुक्त तकनीक का विकास करना है, जो विकेन्द्रीकृत जीवन को बढ़ावा देने में मददगार हो। उत्पादन प्रक्रिया का पैमाना और वे उत्पाद, जो प्राकृतिक पर्यावरण के लिए उपयुक्त नहीं हैं, उन्हें कम किया जाना चाहिए। हमें एक आत्म–नियंत्रित सामाजिक प्रणाली की आवश्यकता है, जहाँ तकनीकी प्रगति को सीमित करना और गतिविधियों को नियंत्रित करना संभव हो सके, ताकि वास्तविक दुनिया को संरक्षित किया जा सके। इस संदर्भ में डॉ. डी. डी. मालवानिया का उद्धरण प्रासंगिक हैः

'विज्ञान ने मानव सुविधाओं में बड़ी प्रगति की है, इसमें कोई संदेह नहीं है, लेकिन मानव समुदाय लालची और हिंसक हो गया है। परमाणु बम का अविष्कार न केवल मानव समाज बल्कि समस्त जीव–जंतुओं के लिए एक बड़ा खतरा है। ऐसी परिस्थितियों में मानवता के लिए मुक्ति, स्वतंत्रता और शांति के रास्ते खोजना आवश्यक है, जो सतत विकास के आधार पर संभव है।''

सतत विकास को तब तक प्राप्त नहीं किया जा सकता जब तक अलग–अलग उपायों को बिना किसी समन्वय के लागू किया जाए। इसके लिए एकीकृत दृष्टिकोण आवश्यक है, जिसमें ग्रामीण विकास, गरीबी उन्मूलन, विकेन्द्रीकरण और ग्रामीण विकास के लिए संरचनात्मक मिशन दृष्टिकोण को प्रभावी रूप से लागू करना शामिल हो।

जनसंख्या और उपभोग वृद्धि के औद्योगिकीकरण और खाद्य उत्पादन बढ़ाने में थोड़े समय के लिए योगदान दिया है, लेकिन सतत विकास के लिए विकेन्द्रीकरण अनिवार्य है। यह एकमात्र व्यवहार्य विकल्प है। इसलिए, लोगों को सतत विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए निरंतर जागरूक और प्ररित करना होगा।

मुख्य विकास का ध्यान मुक्त बाजारों और लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं की खोज पर होना चाहिए, जिसमें समाज के संगठनों का सहयोग भी हो। समाज में, सरकार, संगठनों, और मीडिया को आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि और भौतिक प्रगति के बीच संबंध तलाशने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। यदि सामाजिक कार्यों के किसी भी पहले में मानव जाति की अध्यात्मिक वास्तविकता को महत्व दिया जाए, तो प्रगति अधिक सार्थक और फलदायी होगी।

गांधी ने हमेशा कहा, *''मैं विकास (आर्थिक) और नैतिकता के बीच एक तीव्र रेखा नहीं खींचता। ऐसा विकास जो व्यक्ति या राष्ट्र के नैतिक कल्याण को नुकसान पहुंचाए, वह अनैतिक और पापमय है।''* गांधी का यह विचार इस बात पर जोर देता है कि प्रेम, करुणा, विश्वास, आशा और अहिंसा जैसी गुण ही सामाजिक उन्नति के लिए प्रेरक शक्ति प्रदान करते हैं। यदि मौजूदा विकास प्रणाली इन गुणों पर आधारित हो, तो सतत विकास को सफलतापूर्वक हासिल किया जा सकता है।

जाति, वर्ग, जातीयता या लिंग पर आधारित पूर्वाग्रहों को सख्ती से अस्वीकार करना चाहिए। यदि इन पूर्वाग्रहों से उबर कर मनुष्य मानवता की एकता को पूरी तरह समझ लेता है, तो हमारा उद्देश्य सभी लोगों के समग्र विकास का हो जाता है।

वर्तमान वैश्विक समाज असंतुलित विकास के कारण बड़ी सामाजिक का सामना कर रहा है। इन समस्याओं का समाधान तभी संभव है जब समाज में अहिंसक मूल्यों, सामाजिक एकीकरण और सच्ची सहिष्णुता को अपनाया जाए। इस प्रकार का विकास ही दीर्घकालिक और टिकाऊ हो सकता है।

आज के समय में, स्वैच्छिक आधार पर किए गए कार्यों का विशेष महत्व है। उदाहरण के लिए, यू.के. में स्थानीय स्तर पर राजनीतिज्ञ और प्रशासक न्यूनतम आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कार्य करते हैं। यह विश्वास का एक उचित तरीका है, और इसी प्रकार की विकेंद्रीकृत सोच की आवश्यकता समाज के पुनर्निर्माण और समृद्धि की ओर बढ़ाने के लिए है।

संसाधनों का असमान वितरण विश्व को 'अमीर' और 'गरीब' के बीच विभाजित करता है। तीसरी दुनिया के देशों में गरीबी का मुख्य कारण प्राकृतिक संसाधनों की अत्यधिक कमी है, जिसके कारण वनों की कटाई और जल व वायु के माध्यम से मृदा क्षरण होता है। इस समस्या से बचने के लिए पुनः वनीकरण और मृदा संरक्षण जैसे रचनात्मक कार्यक्रमों की आवश्यकता है। इसके साथ ही, पर्यावरण के लिए उपयुक्त तकनीकों का उपयोग किया जाना चाहिए ताकि टिकाऊ विकास सुनिश्चित किया जा सके।

सतत विकास का मुख्य उद्देश्य न केवल समाज में संतुलन स्थापित करना है, बल्कि सभी के बीच अधिकतम संतुष्टि पैदा करना भी है। यह किसी विशेष समूह के पक्ष में नहीं, बल्कि जनसामान्य के कल्याण के लिए होना चाहिए। इसके सफल क्रियान्वयन के लिए लोगों के व्यापक सहयोग को सुनिश्चित करना आवश्यक है। समाज के विभिन्न वर्गों के बीच समन्वय को प्रोत्साहित करने और एक स्पष्ट लक्ष्य की दिशा में प्रयास शुरू करने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों की आवश्यकता है, जो अंततः समाज को एक विकसित स्थिति में ले जा सके।

यह निर्विवाद सत्य है कि विकसित देशों की जीवनशैली में बदलाव की आवश्यकता है। विश्व की कुल जनसंख्या का केवल पाँचवां हिस्सा होने के बावजूद, ये देश विश्व की 70% ऊर्जा, 75% धातु, और 85% लकड़ी का उपभोग करते हैं, जिससे असंतलुन और संसाधनों का दुरुपयोग होता है। विकसित देशों ने वैश्विक संसाधनों को अपनी संपत्ति मान लिया है, जिसके कारण वर्तमान समय की असमानताएं भविष्य में भी समान रूप से बनी रह सकती हैं।

सतत विकास के लिए यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि हर किसी को अब और भविष्य में समान अवसर मिलें। सतत विकास का उद्देश्य सुंदरता, अहिंसा और शांति को महत्व देना है, लेकिन

यह कभी भी उस गतिशील ऊर्जा की कीमत पर नहीं होना चाहिए जो हमें निरंतर बदलाव और प्रगति की ओर ले जाती है।

सतत विकास समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है, और इसे तुरंत अमल में लाना होगा। यदि अभी शुरुआत नहीं की गई, तो बहुत देर हो जाएगी। शांतिपूर्ण तरीकों से सतत विकास की दिशा में किए गए प्रयास न केवल वर्तमान में, बल्कि भविष्य में भी मानवता का लाभान्वित करेंगे। यह विश्व को एक ऐसे स्वर्ग में बदल सकता है, जो आने वाले समय की आवश्यकताओं और समृद्धि को पूरा करे सके।

1.3 सतत विकास और शांतिपूर्ण जीवनः एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

सतत विकास और शांतिपूर्ण जीवन के बीच गहरा संबंध है। यह न केवल पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने का माध्यम है, बल्कि सामाजिक न्याय, सांस्कृतिक समन्वय, और व्यक्तिगत संतुष्टि का भी आधार है। इतिहास में कई ऐसे उदाहरण मिलते हैं, जहां समाजों ने सतत विकास की दिशा में कदम बढ़ाए और शांतिपूर्ण जीवन का मार्ग प्रशस्त किया। इसके विपरीत, जब समाजों ने लालच, असंतुलन और गैर–टिकाऊ विकास का सहारा लिया, तो उन्होंने विनाश और संघर्ष को जन्म दिया।

प्राचीन भारत की सिंधु घाटी सभ्यता एक उत्कृष्ट उदाहरण है। मोहनजोदड़ों और हड़प्पा जैसे नगर टिकाऊ नगर नियोजन, जल निकासी प्रणाली और पर्यावरणीय संतुलन के कारण उन्नति के शिखर पर पहुंचे। सिंधु सभ्यता में संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग और सामुदायिक सहयोग ने एक शांतिपूर्ण समाज का निर्माण किया। इसके अलावा, सिंधु घाटी के निवासी कृषि और व्यापार में भी टिकाऊ तरीकों का पालन करते थे।

दूसरी ओर, मेसोपोटामिया और माया सभ्यता जैसे अन्य ऐतिहासिक उदाहरण भी महत्वपूर्ण है। मेसोपोटामिया में कृषि प्रणाली उन्नत थीं, लेकिन प्राकृतिक संसाधनों का अति–शोषण और पर्यावरणीय असंतुलन ने इसे अंततः पतन की ओर धकेल दिया। माया सभ्यता में भी वनों की कटाई और जल स्त्रोतों के दुरुपयोग ने उनके शांतिपूर्ण जीवन को संकट में डाल दिया।

महात्मा गांधी सतत विकास और शांतिपूर्ण जीवन के प्रबल समर्थक थे। उनके विचारों का सार उनके इस कथन में हैः *''पृथ्वी सबकी जरूरतों को पूरा करने में सक्षम है, लेकिन लालच को नहीं।''* गांधीजी के अनुसार, नैतिकता और विकास को अलग नहीं किया जा सकता। उनका ग्राम स्वराज मॉडल, जिसमें स्थानीय संसाधनों और श्रम का उपयोग किया जाता था, टिकाऊ विकास का आदर्श उदाहरण है। उन्होंने सूत कातने और खादी उद्योग को प्रोत्साहित किया, जो न केवल स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा देता था, बल्कि आत्मनिर्भरता और आर्थिक समानता का भी प्रतीक था।

1.4 सतत विकास और विश्व शांति

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद संयुक्त राष्ट्र का गठन हुआ, जिसने सतत विकास और शांति के लक्ष्य को प्राथमिकता दी। इसके परिणामस्वरूप 1987 में *ब्रंटलैंड आयोग* की रिपोर्ट आई, जिसमें सतत विकास को परिभाषित किया गयाः *''ऐसा विकास जो वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकता को पूरा करे बिना भविष्य की पीढ़ियों का जरूरतों से समझौता किए।''*

संयुक्त राष्ट्र ने सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) के माध्यम से वैश्विक शांति और संतुलन की दिशा में कई महत्वपूर्ण पहल की हैं। जैसे, गरीबी उन्मूलन, जलवायु परिवर्तन पर नियंत्रण, और समानता को बढ़ावा देना।

1.5 ऐतिहासिक शिक्षाएँः युद्ध और विकास

इतिहास हमें यह सिखाता है कि अनियंत्रित विकास और संसाधनों पर नियंत्रण के लिए संघर्ष ने कई बार अशांति और युद्ध को जन्म दिया है। औद्योगिक क्रांति के बाद, यूरोपीय उपनिवेशवाद ने प्राकृतिक संसाधनों का शोषण किया, जिससे पर्यावरणीय असंतुलन और वैश्विक असमानता बढ़ी।

दूसरी ओर, जापान जैसे देशों ने सतत विकास के लिए प्रेरणादायक कदम उठाया। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद जापान ने न केवल अपनी आर्थिक स्थिति को पुनर्जीवित किया, बल्कि पर्यावरणीय स्थिरता को भी प्राथमिकता दी। जापान का ''3R(Reduce, Reuse, Recycle)''मॉडल वैश्विक स्तर पर सतत विकास के लिए प्रेरणा बना।

भारतीय दर्शन और धार्मिक ग्रंथों में सतत विकास और शांतिपूर्ण जीवन के प्रति गहरा झुकाव देखा जाता है। *वृक्षों रक्षति रक्षितः* जैसे विचारों ने पर्यावरण संरक्षण को धार्मिक कर्तव्य बनाया। जैन धर्म में *अहिंसा परमो धर्मः* और बौद्ध धर्म में मध्यम मार्ग जैसे सिद्धांत टिकाऊ जीवनशैली और शांति के प्रतीक हैं।

आज की आधुनिक जीवनशैली में असंतुलित विकास और उपभोग की प्रवृत्ति ने पर्यावरणीय संकट को बढ़ा दिया है। औद्योगिक उत्पादन, उपभोक्तावाद और संसाधनों के अनियंत्रित उपयोग ने जैव विविधता, जलवायु और मानव जीवन को खतरे में डाल दिया है।

लेकिन, हाल के वर्षों में सतत विकास लक्ष्य (SDGs) जैसे वैश्विक प्रयासों ने उम्मीद की किरण जगाई है। 2015 में अपनाए गए 17 सतत विकास लक्ष्य, जैसे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, लैंगिक समानता, स्वच्छ ऊर्जा और जलवायु कार्रवाई, शांति और सतत विकास के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध स्थापित करते हैं।

सतत विकास और शांतिपूर्ण जीवन का मेल समाज को न केवल भौतिक उन्नति की ओर ले जाता है, बल्कि नैतिक और सांस्कृतिक प्रगति का भी आधार बनता है। इतिहास हमें यह सिखाता है कि टिकाऊ विकास और सामूहिक प्रयास ही दीर्घकालिक शांति और संतुलन का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

गांधीजी के विचार, प्राचीन सभ्यताओं के उदाहरण, और आधुनिक वैश्विक पहले स्पष्ट करते है कि सतत विकास केवल नीतियों का विषय नहीं है, बल्कि यह जीवन का एक दृष्टिकोण है। यदि हम इतिहास से सबक लेते हुए वर्तमान में सही कदम उठाएं, तो भविष्य में हमारी आने वाली पीढ़ियां एक सुरक्षित, संतुलित और शांतिपूर्ण दुनिया में की सकेंगी।

संदर्भः

1. आर.के. प्रभु और यू.आर. राव, द माइंड ऑफ महात्मा गांधी।

2. आर.सी. सक्सेना, लेबर प्रॉब्लम्स एंड सोशल वेलफेयर।
3. ई.एफ. शूमाकर, स्मॉल इज ब्यूटीफुल।
4. एडवर्ड गोल्डस्मिथ, द ग्रेट यू टर्न।
5. एडवर्ड गोल्टस्मिथ, द वे (एन इकोलॉजिकल वर्ल्ड व्यू)।
6. गांधी, महात्मा. सत्य के प्रयोगः आत्मकथा।
7. गांधी, महात्मा. हिंद स्वराज्य (1909)
8. जेराल्ड एम. मेयर, लीडिंग इश्यूज इन इकोनॉमिक डेवलपमेंट।
9. डी.एन. घोष, कैसे भारतीय गांव का जीवन सुधारा जा सकता है पर निबंध।
10. डी.डी. मालवाणिया, महावीर और उनके उपदेश से उद्धरण।
11. दासगुप्ता, पार्थ. Ecological Economics and Sustainable Development (2001)
12. ब्रंटलैंड, ग्रो हार्लेम, Our Common Future (1987)
13. रोमेश दीवान और मार्क लुट्ज, गांधीवादी अर्थशास्त्र पर निबंध।
14. वन कंट्री जर्नल, अक्टूबर–दिसंबर, 1994।
15. शूमाकर, एफ.ई. स्मॉल इज ब्यूटीफुलः ए स्टडी ऑफ इकोनॉमिक्स ऐज इफ पीपल मैटर्ड।
16. श्रीवास्तव, रामेश्वर. सिंधु सभ्यता और टिकाऊ विकास (2015)